टाइम्स ऑफ़ पीडिया

TIMES OF PEDIA

ٹائمس آف پیڈیا

NEW DELHI Page 12 Price ₹ 3.00

अनोखे अंदाज़ और निराले तेवर के साथ इंसाफ़ की डगर पर

www.timesofpedia.com

WEEKLY HINDI ENGLISH URDU

WED 23 FEB 2022 - TUE 01 MAR, 2022 | VOL. 10. ISSUE 10 | RNI No. DELMUL/2012/47011

क्या अपने नागरिकों को यूक्रेन से स्वदेश लाने में असमर्थ है सरकार?

यूक्रेन में मार्शल लॉ लगा है और यूक्रेन के विभिन्न हिस्सों में रूसी सैनिकों द्वारा घेराबंदी करने की खबरें आई हैं. इस युद्ध मं सैनिकों के साथ आम लोगों की जाने भी जा रही हैं जो कि अमानवीय है. वैसे युद्ध वह भी किसी स्वतंत्र मुल्क पर कहीं से भी सही नहीं है. इसे तानाशाही फरमान कहा जा सकता है. दुनिया के सभी देश खामोश है, नाटो असहाय है, और विश्व तमाम एजेंसिया नाकारा और बेकार हो गई हैं. कई मुल्क अपने भीतर और बाहर तानाशाही कानून चलाते हैं. क्या इस तरह विश्व में कभी शांती लाई जा सकती है?

अब अगर यूक्रेन में विदेशी छात्रों की बात करें तो सब स्वदेश आना चाहते हैं और सब देशों ने अपने छात्रों और नागरिकों को वापस ले आए हैं मगर भारत के छात्र समाचार लिखने तक वहीं फंसे हैं और भय, भूख और असहाय पड़े हैं. भारत सरकार की तरफ से कोई बयान संतोषजनक नहीं आ रहे हैं. सरकार की तरफ से नकारात्मक कोशिशें हो रही है. भारत सरकार की तरफ से युद्ध को रोकने के लिए रूस से कोई पहल हो रही है अभी सब आशा ही रख सकते हैं.

रूसी लड़ाकू विमान लगातर बम बरसा रहे हैं. कीव तक रूस के सैनिक पहुंच गए हैं. गोला, तोप और बारुद की गंध के बीच भारत के करीब 15 हजार छात्र वहां फंसे हुए हैं।कीव इंटरनेशनल एयरपोर्ट और उसके आसपास फंसे छटपटा रहे हैं। वे आना चाहते हैं, लेकिन उनके पास पैसे नहीं हैं.

कई छात्र वीडियो बनाकर भारतीय सरकार से मदद मांग रहे हैं. यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों ने बताया कि अगले कुछ दिनों तक अब फिलहाल कोई कुछ बताने वाला नहीं है. क्योंकि यहां पर लगातार हमले हो रहे हैं.

वी मुरलीधरन भारतीय विदेश मंत्रालय की तरफ से बोले कि विदेश मंत्रालय यूक्रेन से छात्रों सहित लगभग 18,000 भारतीयों को वापस लाने के लिए कदम उठा रहा है. यूक्रेन में हवाई क्षेत्र बंद है इसलिए भारतीय नागरिकों को निकालने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है. केंद्र सरकार सभी भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगी. वहीं यूक्रेन में भारतीय राजदूत बोले कि कीव में दूतावास खुला है और काम कर रहा है. वहीं नाटो (नॉर्थ एटलाण्टिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन) महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने कहा कि यूक्रेन में गठबंधन सेना भेजने की कोई योजना नहीं है. वे बोले, नाटो यूक्रेन में रूस के आक्रमण की कड़े शब्दों में निंदा करता है. हम रूस से सैन्य कार्रवाई को तुरंत बंद करने और यूक्रेन से पीछे हटने का आह्वान करते हैं. नाटो ने चेतावनी भरे लहजे में कहा है कि रूस को अपनी सैन्य कार्रवाई रोकते हुए फौरन यूक्रेन से हट जाना चाहिए. नाटो ने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की कड़े शब्दों में निंदा की. नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने कहा कि हम रूस से सैन्य कार्रवाई को तुरंत बंद करने और यूक्रेन से हटने का आह्वान करते हैं.

उन्होंने कहा कि हमारे पास हवाई क्षेत्र की रक्षा करने वाले 100 से अधिक जेट और उत्तर से भूमध्य सागर तक समुद्र में 120 से अधिक जहाजों की सुरक्षा है. गठबंधन को आक्रामकता से बचाने के लिए जो भी जरूरी होगा हम करेंगे. आगे का रास्ता तय करने के लिए शुक्रवार 4 फरवरी को नाटो के नेता मुलाकात करेंगे.

हम आशा करते हैं कि यह युद्ध तुरन्त समाप्त हो जाए और दुनिया विश्व युद्ध के ख़तरे से बच जाए. दुनिया के सभी नेताओं को पुतिन को हर हाल में समझाना चाहिए कि वह गलत कर रहे हैं और रूस इस खूनी खेल को तुरन्त बंद कर दे. जहां तक भारतीय नागरिकों उसमें हमारे छात्रों को स्वदेश लाने का सवाल है वे युद्ध के मैदान में हैं और इसे बातचीत से ही सुलझाया जा सकता है. जब तक बातचीत नही होगी कोई रास्ता नही निकलेगा.

—आईएएन डेस्क

Ali Aadil Khan - Editor's Desk

अमेरिका और ब्रिटेन ने यूक्रेन के साथ किया बड़ा धोखा

Budapest Memorandum (स्मृतिपत्र) यानी 5 Dec 1994 को यूक्रेन अपना एटमी खजाना रूस के सुपुर्द कर चुका था, और आज की इस जंग का वसीयतनामा अपने गले में डाल लिया था. रूस, अमेरिका, UK और बरतानिया ने मिलकर यूक्रेन के साथ बड़ा धोखा किया था. दरअसल 1994 से पहले यूक्रेन, रूस और अमेरिका के बाद दुनिया की तीसरी बड़ी एटमी ताकत था. यूक्रेन के साथ बेलारूस और कजाकिस्तान ने भी अपने एटमी हथ्यार रूस के सुपुर्द कर दिए थे और NPT यानी Nuclear Non Proliferation Treaty या परमाणु अप्रसार संधि पर Signature कर दिए थे. और इसके बदले अमेरिका और बरतानिया ने इन मुमालिक को बहुत सी सहूलतें देने और किसी मुल्क के हमला करने पर फौजी मदद का विश्वास दिलाया था. जबकि आज सिर्फ खाली जबानी जमा खर्च हो रहा है. हालांकि Germani ने Anti Missile Lonchers की एक बड़ी खेप जमीनी रास्ते से यूक्रेन को भेज दी है. इसी बीच Ukrain ने European Union में इसका नाम शामिल करने की अपील की है ताकि EU के सभी मुल्क यूक्रेन की मदद के लिए संवैधानिक तौर से बाद्धय हो सकें जिससे रूस और उसके सहयोगियों पर जंग बंदी का दबाव बन सके.

फिलहाल यूक्रेन की अवाम को कयामत का सामना करना पड़ रहा है, हर एक अपनों की खैर लेने के लिए बेचौन है, पूरे यूक्रेन में अफरा तफरी का माहौल है, लेकिन बहुत से लोग और देश आज भी आग के साये में बैठकर यही कह रहे हैं, हम तो सुकून से हैं हमारे देश पर थोड़ी न कोई हमला हुआ है, बस मस्त रहो, लेकिन याद रहे New World Order के सपने को पूरा करने, साम्राजयवाद और Colonial System को पूरे विश्व पर थोपने की यह आग उनतक पहुँच कर रहेगी जो आज खुद को मेहफूज समझ रहे हैं.

जरा याद करें सीरिया और फलस्तीन, लीबिया, अफगानिस्तान, इराक, वयतनाम, क्यूबा और हिरोशिमा पर होने वाली बमबारी के बाद वहां पैदा होने वाले हालात को. जरा सुनें खुले आसमान के नीचे अपने माँ बाप और बहिन भाइयों की बिखरी लाशों के बीच और मकान के मलबे के नीचे दबी एक मासूम बच्चे की उस चीख को, जो खुद भी लहू लुहान था जिसके चेहरे पर उसके माँ बाप एक आंसू की बूँद देखकर तड़प जाते थे और माँ अपने पल्लू और अपने गाल से बच्ची के गाल पर टपकते आंसू को साफ करती थी. एक रोज वो लाडला खून से लतपत था. तनहा बे यारो मददगार खुद अपने माँ बाप की लाशों के बीच बैठा दुश्मन से बदला लेने के लिए अपने रब से फरयाद कर रहा था.और कह रहा था मैं अपने अल्लाह से शिकायत करूँगा इन जालिमों की. जिन्होंने मेरे घर को तबाह कर दिया और मेरे बाप को मुझसे छीन लिया, और इसी आहो बका के बीच यह बच्चा भी अपने माँ बाप की गोद में हमेशा की नींद सो गया था.

याद करो उस रोज कौन कौन देश उनकी इस बेबसी और मजलूमियत पर बगलें बजा रहे थे, कहीं उनमें हम तो नहीं थे? क्या आज भी कुछ इंसानियत के खून और यूक्रेन की बर्बादी पर खुश हो रहे हैं? याद रखें जो कौमें मजलूम की बर्बादी पर खुश होती हैं एक रोज उनकी बर्बादी पर भी दुनिया जश्न मनाती है. ऐ खुद गर्ज इंसान जरा सोच, दूसरों की बर्बादी पर हंसने वालो वक्त बदलता है. और उस बदलते वक्त में अपनी तबाही अक्स देख लिया करो ताकि कुछ पश्चाताप कर सको.और जंग, जंग मसलों का हल नहीं होती.

भारत पर क्या होगा असर

विदेशी बाजारों में क्रूड के भाव 8 साल के ऊपरी स्तर पर पहुंच गई है. ब्रेंट क्रूड 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया है. तानाशाही विचारधारा के चलते अगर यह जंग आगे चली तो तेल की सप्लाई पर असर होगा और क्रूड शॉर्ट टर्म में 105 डॉलर प्रति बैरल को छू सकता है. अगर क्रूड का भाव 100 डॉलर के पार बना रहता है तो पेट्रोल और डीजल भी महंगे होने के आसार हैं. इससे भारत में महंगाई के और बढ़ने की पूरी आशंका है. जबकि हमारा देश पहले ही मंगाई, गरीबी और बेरोजगारी की मार झेल रहा है, और तानाशाही शासन प्रणाली की तरफ तेजी से बढ़ रहा है, जिसके लिए हालिया दिनों में, Demonitisation, CAA, NRC, UAPA, नए संपत्ति कानून, और ग्रह मंत्री द्वारा दिया गया ब्यान 2056 तक हमारी हुकूमत रहेगी, हम नई तारीख लिखेंगे जैसे दावे, तानाशाही की तरफ बढ़ते कदम की निशानदही करते हैं. जो धोखे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यूक्रेन जैसे सैकड़ों मुल्कों को दिए गए, कहीं भारत भी तो इस तरह के किसी धोखे का शिकार नहीं हो जाएगा, क्योंकि अमेरिका, रूस और Britain जैसे देशों को दुश्मनी मजहब से नहीं बल्कि विकास के आधार पर है, कोई छोटा और गरीब देश एटॉमिक शक्ति न बने और विकसित भी न हो. जंग वर्चस्व की है विचारों की नहीं.

दुआ करें की जंगों और नफरतों का माहौल खत्म हो, जालिम बादशाहों और तानाशाहों का दुनिया से खात्मा हो, धरती पर अम्नो सुकून, और सौहार्द का बोल बाला हो.

साहिर लुध्यानवी की कलम से :

ख़ून अपना हो या पराया हो
नस्ल–ए–आदम का ख़ून है आख़िर
जंग मशरिक में हो कि मगरिब में
अम्न–ए–आलम का ख़ून है आख़िर
फत्ह का जश्न हो कि हार का सोग
जिंदगी तो मय्यतों पे रोती है
जंग तो खुद ही एक मसअला है
जंग क्या मसअलों का हल देगी
इस लिए ऐ शरीफ इंसानो
जंग टलती रहे तो बेहतर है
आप और हम सभी के आँगन में
शम्अ जलती रहे तो बेहतर है

Editor/Owner/Printer/Publisher: Ali Aadil Khan, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar, Okhla, ND - 25. **Printed at :** Shobi Offset Press, 2818, Gali Gadhiaiya, Kuchachalan, Daryaganj, ND. - 2

Where is India Heading Towards?

Dr. Mohammad Manzoor Alam

The framers of our Constitution dreamt of an ideal nation, which aspired to be inclusive and respected the nation's rich diversity. Striving at the nation's prosperity and progress, India's Constitution embraced a democratic ethos that was ahead of its time. The far-sightedness of these leaders could be summed up as phenomenal. The extensive constitutional debates at the time of its formation is a testimony to the efforts put in by the founding fathers of our nation to make India an inclusive country that it intended for.

Justice Madan B. Lokur, former judge of the Supreme Court, called for enacting a special law to combat hate speech against minorities.

Cut to 2022, where do we stand as a nation? The state-affiliated violence ushered on minorities, the vilification of Muslims and weaker sections of society, and the Hindutva zealots' pursuit of recasting the democratic nation into a Hindu Rashtra pinpoint the failure of the vision of independent India entwined by the Constitution makers of India. The country has been stooping low each day to a new record. Now, the students belonging to the Muslim community are being denied their fundamental rights, and the people of India are busy debating whether sporting a hijab is an "essential" practice or not.

The sacrifices made by our people during the Partition, who lost their blood and sweat, are being humiliated and ridiculed by the demonstrative pseudo-nationalists. The spirit of the Constitutional institutions is losing its sheen and has been painted in the hue of "saffronised" political ideology. The utter silent policy adopted by the ruling party on the matters of hate speech, lynching, online auction of Muslim women, slapping draconian laws on political activists, etc., against people from minority communities say a lot about their ideological alignment.

In such bleak days, what are we left with? The constitution is the simplest answer. The idea of justice, liberty, equality, and fraternity of "SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC" India is the only ray of hope we have at our disposal. Upholding these values is both the responsibility of our government and its people, especially those who believe in religious majoritarianism. We have to remind ourselves why India embraced everyone, irrespective of caste, class, and religion. There is a wide contrast between what our forefathers imagined India to be and how is it turning out to be. We have now our elected leaders who use derogatory name-calling for Muslims and identify people by their clothes. What are they feeding the young mind? Isn't this behaviour normalizing institutional violence and hate speech? The other pillars of democracy need to take cognizance of the departure of democratic India into an authoritative one and proceed accordingly.

The vision of our forefathers to set a precedent for the world, modeling India as an inclusive and diverse country, are being crushed by anti-minorities brigades. Prior to this, India had been looked up to as one of the fastest-growing economies with socio-cultural development, which aimed at making India a global power. Currently, India is lagging in all the social indices, which puts India into a compromised position. Globally, there have been multiple reports indicating a decay in India's democratic ethics. Earlier, the world that used to look at India with such fascination with regards to its commitment to secularism and economic progress is now watching India's violent attacks on minorities at each step, and the dent in the Constitutional practices has placed India as "partly free" (according to an annual report on global political rights and liberties) from a "free" country, indicating a downfall of India's democracy.

Assessing the rise in hate speech and violence against minorities, Justice Madan B. Lokur, former judge of the Supreme Court, called for enacting a special law to combat hate speech against minorities. There is no doubt the institutions of democracy have been compromised by the Hindu nationalist ideology. But, it is never too late to come back to the Constitutional obligation to secularism. As Justice Lokur pointed out, the court machinery has to ensure that they are functioning as per the Constitution and not aligning towards the majoritarian assertion of India by the Hindutva forces. India is home to people belonging to a different religion, caste, ethnicity, culture, class, etc., and therefore, coercing this multiplicity into a dogmatic and hollowed idea of Hindu Rashtra could break India into shards.

NOTICE:

Times of Pedia does not guarantee, directly or indirectly, the quality or efficacy of any product or services described in the advertisements or other material which is commercial in nature in this Newspaper. Furthermore, Times of Pedia assumes no responsibility for the consequences attributable to inaccuracies or errors in the printing of any published material from the news agencies or articles contributed by readers. It is not necessary to agree with the views published in this Newspaper. All disputes to be settled in Delhi Courts only.

Russian army bears heavy losses, they are afraid of us, claims Ukraine

It is the fifth day since Russian President Vladimir Putin declared war on Ukraine, leading to heavy fighting and airstrikes across the country. According to Ukraine, 352 civilians have been killed since Russia invaded the country. Ukraine agreed on Sunday to hold peace talks with Russia at the Belarus border. Meanwhile, Russian President Putin has directed his defence minister and chief of the military's General Staff to put the country's nuclear deterrent forces in a "special regime of combat duty."

Responding to Russian aggression in Ukraine, Belgium, Finland and Canada have joined the list of countries that have shut down their airspace to Russian planes. Western nations led by the US also announced a new set of economic sanctions on Russia.

चौधरी जुबैर का स्वागत और फहद खान की हिमायत में भव्य कार्यक्रम का आयोजन

सैंकड़ों लोगों ने की शिरकत, इलाके में अम्न और शांति बनाने और क्षेत्र में भाई चारे की फिजा बहाल करने का भी लिया संकल्प

Program के नाजिम और संचालक ने इलाके में हिन्दू मुस्लिम एकता बनाने के लिए उपस्थित जनों को प्रेरित किया और मुसलमानो को अपनी मिल्ली जिम्मेदारी निभाते हुए तमाम मख्लूक से मोहब्बत का पैगाम आम किया, साथ ही सांप्रदायिक एकता को विकास का आधार बताया, और नफरत के सौदागरों से बचने और उनको पराजित करने का आह्वान किया

नई दिल्ली 24 फरवरीः देश में कहीं न कहीं कभी न कभी चुनाव का सिलसिला चलता ही रहता है, कभी संसदीय आम चुनाव, तो कभी विधान सभा चुनाव, कभी निकाय चुनाव तो कभी पंचायती चुनाव इत्यादि. अब UP के विधान सभा के तुरंत बाद दिल्ली निकाय के चुनाव होने हैं जो काफी अहम हैं. इसके लिए Candidates के टिकट मांगने की रस्सा कशी शुरू हो गयी है.

चुनाव में अपना Candidate उतारने के लिए आम तौर से पार्टियां जो मानक तै करती हैं उसमें, दबंगई, पैसा और इलाके में भावी प्रत्याशी की पहचान को आधार बनाया जाता है. इसमें प्रत्याशी की नेकी, नैतिकता, मानवता, जुझारूपन, उसकी तालीम, तहजीब और दीनदारी को दरकिनार ही रखा जाता है. जो देश और इलाके के लिए खतरनाक होता है और उसके नतीजे नकारात्मक ही होते हैं.

इसी सम्बन्ध में दिल्ली के विजय Park इलाके वार्ड NO.48 E में एक प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसमें इलाके के वरिष्ठ कोंग्रेसी नेता चौधरी मतीन के बेटे व पार्षद चौधरी जुबैर को नेता सदन (Congress) पूर्वी दिल्ली नियुक्त किये जाने के अवसर पर स्वागत समारोह कार्यक्रम रखा गया. एक अजीब इत्तिफाक यह था की इस इलाके में आज ही के दिन यानी 24 मिइ 2020 को भयानक सांप्रदायिक दंगे हुए थे जिसमें 50 से ज्यादा इंसानी जानों और अरबों रूपये की संपत्ति का नुकसान हुआ था.

इस अवसर पर मेहमान खुसूसी चौधरी जुबैर ने अपने ख्यालात का इजहार करते हुए कहा, नेता का काम पैसा कमाना नहीं बल्कि इलाके में अमन बहाली, इलाके की खुशहाली और समाज में एकता और अखंडता बनाये रखना होना चाहिए. पार्षद जुबैर ने दिल्ली दंगों के दौरान उनके क्षेत्र में किसी भी जान या बड़े माल के नुकसान न होने के लिए इलाके के लोगों की तारीफ की और अपनी कोशिशों को भी सामने रखा.

उन्होंने कहा क्या अमीर आदमी को ही एयर कंडीशन में आराम करने का हक है ? कांग्रेस के दौर में एक आम आदमी भी फ्री में कूलर चलाकर अपनी रात गुजार लिया करता था, आज सिर्फ 200 यूनिट तक बिजली फ्री का ढिंढोरा है जबकि कांग्रेस के दौर में गरीब को 500 यूनिट तक भी कोई हिसाब नहीं देना पड़ता था.

उन्होंने AAP पर आरोप लगाया कि दिल्ली दंगे केजरीवाल की साजिश का हिस्सा थे, चौधरी ने कहा दिल्ली का नार्थ ईस्ट इलाका साम्प्रदायिकता की आग में झुलसता रहा दंगे भड़क रहे थे और AAP का एक MLA या कोई कार्यकर्ता भी सामने निकलकर नहीं आया, जबकि हम दिनों रात इलाके में घूम रहे थे. चौधरी जुबैर ने यह भी आरोप लगाया कि 2021 के नगर निगम उपचुनाव में केजरीवाल 1000 पुलिस फोर्स के साथ मेरे इलाके में पहुंचे थे, अगर दंगों के दौरान 200 पुलिस कर्मियों के साथ भी CM दौरा कर लेते तो दंगे रुक जाते. मगर मंशा कुछ और ही थी.

पूर्वी दिल्ली नगर निगम के विजय पार्क 48E वार्ड के मजबूत दावेदार फहद खान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए चौधरी जुबैर ने इस भव्य आयोजन की तारीफ करते हुए कहा कि इस वक्त में इतनी भारी संख्या में लोगों का जमा करना बड़ी बात है और यह कांग्रेस के लिए जनता में बढ़ते विश्वास को भी दर्शाता है, जबकि फहद की लोकप्रियता तो साफ झलकती है.

उन्होंने फहद खान की तारीफ करते हुए कहा, श्री खान को क्षेत्र के लोगों का भारी समर्थन उनके आचरण, नैतिकता और समाज सेवी कार्यों के चलते ही संभव हो पाया है, चौधरी जुबैर ने श्री खान के उज्जवल भविष्य की दुआ की और इलाके में अम्न, शांति और भाई चारा बनाये रखने के लिए जनता को प्रेरित किया.

फहद खान ने भी इस मौके पर क्षेत्र और दुसरे इलाकों से आये तमाम उपस्थितगणों का अभिनन्दन किया और शुक्रिया भी अदा किया कि उन्होंने अपना कीमती समय श्री खान कि ब्सस पर दिया, और चौधरी जुबैर को निगम में नेता सदन के नियुक्त किये जाने के लिए सभी उपस्थितजनों की तरफ से मुबारकबाद दी तथा उम्मीद जताई कि जुबैर उर्फ गुड्डू चौधरी के नेतृत्व में पूरे इलाके का विकास होगा और आइंदा नगर निगम के चुनाव में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिलेगा.

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथी चौधरी जुबैर अहमद के अलावा मधुसूदन गोशाला के मालिक और समाज सेवी जुबेद उर्रहमान खान उर्फ (बब्बन मियां), हाजी नईम खान, कैलाश ठाकुर, सुहेब तारिक, शाहनवाज खान उर्फ शानू, रियाज उल इस्लाम,उमेश शर्मा,माज खान, असलम चौधरी, डक अजहर, इकबाल मिर्जा भाई, खुर्शीद भाई, अकरम मलिक, हशमुद्दीन भाई, चौधरी जफर, संदीप मित्तल, राकेश सिंघल, मुहम्मद इरफान, चाँद भाई, सय्यद अब्दुल्लाह, मोहन आहूजा और गुल्लू भाई के अलावा कई गणमान्य हस्तियों ने भी शिरकत की और चौधरी जुबैर को मुबारकबाद तथा फहद खान को अपनी दुआओं से नवाजा.

देश को तबाह कर देगा धार्मिक अतिवाद का यह पागलपन

जमीअत उलमा–ए–हिंद की कार्यसमिति की बैठक संपन्न

धार्मिक घृणा और सांप्रदायिकता के आधार पर लोगों को बांटने का यह खतरनाक खेल आख़िर कब तक? मौलाना अरशद मदनी

लड़कों और लड़कियों के लिए अलग अलग स्कूल और कॉलेज खोलने का समय आ गया है

26 फरवरी 2022रू जमीअत उलमा–ए–हिंद की कार्यसमिति की बैठक इसके मुख्य कार्यालय 1–बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली में मौलाना अरशद मदनी की अध्यक्षता में आयोजित हुई. इस मीटिंग में देश की वर्तमान स्थिति और कानून–व्यवस्था की गंभीर स्थिति पर गहिरी चिंता प्रकट की गई और साथ ही अन्य अहम मिल्ली और सामाजिक मुद्दों, आधुनिक शिक्षा, लड़के और लड़कियों के लिए स्कूल और कॉलेज की स्थापना विशेषकर लड़कियों के लिए दीनी माहौल में शैक्षिक संस्थानों की स्थापना और समाज सुधार के तरीकों अथवा आधिकारिक एवं संगठन के कार्यों पर विस्तार से चर्चा की गई.

कार्यसमिति के सदस्यों ने चर्चा में उठाए गए विषयों पर खुल कर अपने विचार और संवेदनशीलता व्यक्त की और कहा कि जमीअत उलमा–ए–हिंद अपनी स्थापना से देश में सांप्रदायिक एकता और सहिष्णुता के लिए सक्रीय रही है, और देश में बसने वाले सभी धार्मिक, भाषायी और सांस्कृतिक इकाइयों के बीच प्यार–मुहब्बत के जज्बे को बढ़ावा देने के लिए हर स्तर पर प्रयास करती आई है और कर रही है.

वह आज भी इसी मूल नीति और उद्देश्य के लिए देश के बुद्धिजीवियों, सामाजिक संगठनों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखने वाले लोगों से आग्रह करती है कि वह अपने प्रभाव का प्रयोग करके देश के बिगड़ते हुए माहौल को बचाने का प्रयास करें जिसने देश की एकता, अखण्डता और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर दिया है.

अध्यक्ष जमीअत उलमा–ए–हिंद ने कहा कि धर्म के नाम पर किसी भी तरह की हिंसा सवीकार्य नहीं हो सकती, उन्होंने कहा कि धर्म मानवता, सहिष्णुता और प्रेम का संदेश देता है इसलिये जो लोग इसका प्रयोग नफरत और हिंसा के लिए करते हैं वह अपने धर्म के सच्चे अनुयायी नहीं हो सकते हैं और हमें हर प्रकार से ऐसे लोगों की निंदा और विरोध करना चाहिये. उन्होंने कहा कि घृणा और सांप्रदायिकता का बड़ा कारण यह है कि अधिकतर राजनेताओं में नफरत को बढ़ावा देकर सत्ता प्राप्त करने की हवस तीव्र हो गई है जिसके कारण सांप्रदायिकता और धार्मिक अतिवाद में असाधारण वृद्धि हुई है.

उन्होंने यह भी कहा कि कुछ राजनेता बहुसंख्यकों को अल्पसंख्यकों के खिलाफ लामबंद करने के लिए धार्मिक अतिवाद का सहारा लेने लगे हैं ताकि आसानी से सत्ता प्राप्त कर सकें और शासकों ने डर और भय की राजनीति को अपना आदर्श बना लिया है लेकिन मैं सपष्ट कर देना चाहता हूं कि सरकार डर और भय से नहीं बल्कि नयाय से ही चला करती है.

आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यह देश किसी विशेष धर्म की विचारधारा से चलेगा या धर्मनिरपेक्षता के सिद्धानतों पर. उन्होंने कहा कि स्थितियां बहुत विस्फोटक होती जा रही हैं ऐसे में हमें एकजुट हो कर

सामने आना होगा. मौलाना मदनी ने स्पष्ट किया कि हमारा विरोध और हमारी लड़ाई किसी राजनीतिक दल से नहीं, केवल उन शक्तियों से है जिन्हों ने देश के धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को रौंद कर अत्याचार और आक्रमकता का रास्ता अपना लिया है.

लोगों के मन में तरह तरह के अनावश्यक मुद्दे उठा कर धार्मिक पागलपन पैदा करने का प्रयास हो रहा है मगर आशाजनक बात यह है कि तमाम षड़यंत्रों के बावजूद देश के अधिकांश लोग सांप्रदायिकता के खिलाफ है. देश की स्थिति निसंदेह निराशाजनक है लेकिन हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस देश में एक बड़ी संख्या न्यायप्रिय लोगों की मौजूद है जो सांप्रदायिकता, धार्मिक अतिवाद और अल्पसंख्यकों के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ न केवल आवाज उठा रही है बल्कि निडर हो कर सच बोलने के साथ साथ उन सांप्रदायिकों के ख़िलाफ अदालत भी जा रहे हैं.

मौलाना मदनी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों के साथ जो कुछ होता आ रहा है यहां दोहराने की जरूरत नहीं है, नए नए मुद्दे उठा कर मुसलमानों को न केवल उकसाने का प्रयास हो रहा है बल्कि उन्हें अलग थलग कर देने का योजनाबद्ध षड़यंत्र हो रहा है, लेकिन इन सब के बावजूद मुसलमानों ने जिस धैर्य से काम लिया है वह एक उदाहरण है. इसके लिये देश का एक बड़ा न्यायप्रिय वर्ग उनकी प्रशंसा कर रहा है.

उन्होंने कहा हमें आगे भी इसी तरह धैर्य से काम लेना होगा क्योंकि सांप्रदायिक शक्तियां आगे भी विभिन्न बहानों से उकसाने और भड़काने का प्रयास कर सकती हैं. उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने वाले हमारे बड़ों ने जिस भारत का सपना देखा था वह ऐसी नफरत और अत्याचार का भारत नहीं था. हमारे बड़ों ने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें बसने वाले तमाम लोग जाति, पंथ और धर्म से ऊपर उठकर शांति और सद्भाव के साथ रह सकें.

हिजाब को लेकर मौलाना मदनी ने कहा कि कुछ तथाकथित पढ़े–लिखे लोग गलत धारणा बना रहे हैं कि इस्लाम में हिजाब की पाबन्दी नहीं है और कुरान में हिजाब का जिक्र नहीं है, जबकि ऐसा नहीं है. पवित्र कुरान और हदीस में हिजाब पर इस्लामी दिशानिर्देश हैं की शरीयत के अनुसार हिजाब अनिवार्य है.

जहां तक संवैधानिक मुद्दे का सवाल है, संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत अल्पसंख्यकों को जो इख्तियारात हासिल हैं उस के कारण मुस्लिम छात्रों को हिजाब पहनने से रोकना अनुच्छेद 25 का उल्लंघन है. क्योंकि संविधान का अनुच्छेद 25 गारंटी देता है कि देश के प्रत्येक नागरिक को धर्म, धार्मिक पालन और पूजा की पूर्ण स्वतंत्रता है, भारत का कोई आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है लेकिन यह सभी नागरिकों को अपने धर्म का पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता देता है.

मौलाना मदनी ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता का मतलब ये नहीं है कि कोई भी व्यक्ति या समूह अपनी धार्मिक पहचान प्रकट न करे . हाँ ये बात धर्मनिरपेक्षता में जरूर है की हुकूमत किसी विशेष धर्म की पहचान को तमाम नागरिकों पर ना थोपे. हिजाब कुरान और सुन्नत पर आधारित एक धार्मिक कर्तव्य है, बल्कि एक प्राकृतिक और तर्कसंगत आवश्यकता भी है.

मौलाना मदनी ने कहा कि शिक्षा को बढ़ावा देने पर जमीअत उलमा–ए–हिंद का ध्यान पहले दिन ही से रहा है. मदरसों की स्थापना के साथ साथ आधुनिक और तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले गरीब और जरूरतमंद छात्रों को जमीअत उलमा–ए–हिंद और मौलाना हुसैन अहमद मदनी चौरीटेबल ट्रस्ट देवबंद 2012 से लगातार मैरिट के आधार पर चुने जाने वाले छात्रों को स्कालरशिप दे रही है. उल्लीखनीय है कि पिछले शिक्षा सत्र के दौरान 656 छात्रों को लगभग एक करोड़ रुपये की स्कालरशिप दी गई, जिसमें हिंदू छात्र भी शामिल थे.

यह इस बात का प्रमाण है कि जमीअत उलमा–ए–हिंद धर्म के आधार पर कोई काम नहीं करती. इसी स्कीम के अंतर्गत इस वर्ष भी स्कालरशिप दी जाएगी. मौला मदनी ने कहा कि हमें ऐसे स्कूलों और कॉलिजों की अति आवश्यकता है जिनमें दीनी माहौल में हमारे बच्चे उच्च आधुनिक शिक्षा किसी रुकावट और भेदभाव के बगैर प्राप्त कर सकें, उन्होंने कौम के प्रभावशाली लोगों से आग्रह भी किया जिनको अल्लाह ने धन दिया है अधिक से अधिक लड़के और लड़कियों के लिए अलग अलग ऐसे स्कूल और कॉलेज बनाएं जहां बच्चे दीनी माहौल में आसानी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें.

मौलाना मदनी ने कहा कि हमें जिस तरह मुफ्ती, उलमा और हाफिजों की जरूरत है उसी तरह प्रोफेसर, डाक्टर, इंजीनियर आदि की भी जरूरत है. दुर्भाग्य यह है कि जो हमारे लिए इस समय अति महत्वपूर्ण है उस ओर मुसलमान विशेषकर उत्तर भारत के मुसलमान ध्यान नहीं दे रहे हैं. आज मुसलमानों को अन्य चीजों पर खर्च करने में तो रुची है लेकिन शिक्षा की ओर उनका ध्यान नहीं है. यह हमें अच्छी तरह समझना होगा. देश की वर्तमान स्थिति का मुकाबला केवल शिक्षा ही से किया सकता है.

जमीअत उलमा–ए–हिंद देश के हर नागरिक से भी यह अपील करती है कि वो सांप्रदायिकत शक्तियों के झूठे और गुमराह करने वाले प्रोपेगंडे के झांसे में न आएं और देश की स्थिति को बेहतर बनाने में अपना अपना योगदान दें और अपने पूर्वजों की पुरानी परंपराओं को न छोड़ें. जमीअत उलमा–ए–हिंद इस अवसर पर उन सभी राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और संस्थानों से भी आग्रह करती है जो देश में धर्मनिरपेक्ष और कानून के शासन में यकीन रखते हैं, वह सांप्रदायिक शक्तियों के खिलाफ एकजुट होजाएं.

जमीअत उलमा–ए–हिंद का यह दृढ़ विश्वास है कि देश के विकास, समृद्धि और सुरक्षा की कुंजी आपसी भाईचारा, सहिष्णुता और धार्मिक सद्भाव में तिहित है, इसके बिना हमारा देश भारत विकास के रास्ते पर नहीं चल सकता. कार्यसमिति की कार्रवाई माननीय अध्यक्ष की दुआ पर संपन्न हुई. बैठक में माननीय अध्यक्ष के अतितिक्त जिन सदस्यों ने भाग लिया उनके नाम यह हैंः– मुफ्ती सैयद मासूम सचिव जमीअत उलमा–ए–हिन्द, मौलाना अब्लु अलीम फारूकी उपाध्यक्ष जमीअत उलमा–ए–हिन्द लखनऊ, मौलाना असजद मदनी देवबंद, मौलाना अबदुल्लाह नासिर बनारस, मौलाना अशहद रशीदी मुरादाबाद, मुफ्ती गयासुदीन हैदराबाद, फजलुर्रहमान कासमी मुंबई. इसके इलावा विशेष आमंत्रित के रूप में मौलाना मुहम्मद मुस्लिम कासमी दिल्ली, मौलाना मुहम्मद खालिद कासमी हरियाणा, मौलाना अबदुल कय्यूम कासमी मालेगांव, मौलाना हबीबुर्रहमान कासमी जोधपुर, मौलाना मुहम्मद राशिद राजिस्थान, मौलाना बदर अहमद मुजीबी पटना शामिल हुए.

फजलुर्रहमान, प्रेस सचिव,
जमीअत उलमा–ए–हिन्द, 09891961134

UP: Prayagraj's Sizeable Muslim Community Wants 'Yogi's Reign of Terror' to End

UP: Prayagraj's Sizeable Muslim Community Wants 'Yogi's Reign of Terror' to EndIn Uttar Pradesh's Prayagraj district, there is a sizeable Muslim community. For them, the right to live with respect and dignity is the primary issue in the ongoing elections. Members of the community in unison say they want "Yogi's reign of terror" to end, writes K.K. Pandey.

In the two Muslim-dominated urban assembly seats of Prayagraj district, Allahabad West and Allahabad South, the minority community will play a decisive role as against the rural constituency of Handia, where minority voters are fewer in numbers.

On the road leading to Handia's Imamganj area from Baraut, a group of Muslim youth was awaiting the arrival of the Samajwadi Party candidate, Hakim Lal Bind, for an election rally near Dubahan market in Ghausia. When asked about their primary issues, the men said that more than anything else, fighting for the right to live with respect and honour will be the election issue during the ongoing elections in the state.

Despite being dissatisfied with the work of the incumbent MLA, the Muslim voters in the area still support him. Bind won on a BSP ticket in the 2017 polls and is in the fray as an SP candidate this time.

About the MLA's term, one of the youngsters and a student of commerce, Aslam, said, "He did not do any work. In fact, the neighbouring village Gaharpur, which has a dominant Bind population, had a water-logging issue two years ago. But the MLA did not visit the village despite several requests."

However, getting rid of Yogi Adityanath's "reign of terror" is the primary concern for him.

As this correspondent clicked a picture of a mosque before striking a conversation with them, the locals thought that he was a government official and an order was issued for the demolition of the roadside mosque. Aslam and many of his friends did not consent to being photographed. So, the correspondent clicked a group photo of the crowd holding garlands in their hands and left. He also spoke with some elderly men in the Imamganj market, who share a similar opinion regarding poll issues.

At a tea stall in Allahabad South, he met a group of men and asked them about their concerns. "Tell me, what can be the issues of people in a Muslim-dominated area?" asked Tauheed, from among the group.

"Safety and a respectable life are the biggest issues," he quickly added. "To be able to go out freely with our family, and for our women to wear niqab and not hear insulting and provocative remarks."

"Politics should not be mixed with religion," said Tahir, another local present there. "The BJP's kind of politics is not in the interest of the country."

-Agency

'How Do We Reach the Borders?': Indians in Ukraine Struggle to Escape Russian Invasion

As the Russian attack on Ukraine continues, countless Indian students and professionals remain stuck in different parts of Ukraine, writes Taruni Aswani.

Amid blasts, cross-border shelling and some efforts by the Indian government to evacuate citizens, Indian students caught in the intensifying military crisis feel they are being left to fend for themselves.

A 24-year-old student in Kharkiv, Nadeem Mandelia, has been living in the underground subway of the Naukova metro station for almost two days now. Mandelia, a student at the V.N. Karazin Kharkiv National University, told The Wire, "This station is 500 metres away from my hostel. In between explosions, I am running back to my hostel to procure food items, those also won't last long."

Mandelia laments the Indian government's alleged inaction of the Indian government. The government, he said, is evacuating Indians from Chernivtsi, a city which is barely 20 km from Romania. "They have not started any evacuations from Kharkiv. Here there are bombings every few hours and even minutes, but they are evacuating people from Chernivtsi, which has barely seen any aggression," said Mandelia.

Originally from Rajasthan, Mandelia and his other Indian friends in Kharkiv are watching while their fellow students from other countries are evacuated by their respective governments. "Locals seem prepared, they've seen a war before, they know where to hide and how long to stock up supplies, but us, we are still waiting for help which we cannot see anywhere near us," Mandelia continued. He claimed that at least 7,000 Indian students are currently stranded in Kharkiv, with no access to any evacuation drives.

"I have filled hundreds of evacuation forms, but nobody is here to ensure our safe exit."

Payal Mulani, another student from Rajasthan at the Petro Mohyla Black Sea National University, is living in her hostel basement with 146 other Indian students stranded in Mykolaiv. "Locals have been throwing gas bombs and petrol molly bombs at the Russian military now," said Mulani, as she spoke to The Wire amid explosions.

The Russian military also bombed the strategic maritime town of Mykolaiv in southern Ukraine on Saturday night. One substantial blast lit up the skyline at around 6 pm local time. Heavy shelling vibrated throughout the outskirts of the town, sending residents into deeper panic and dingy basements.

Mulani and scores stranded with her are running out of supplies and have claimed that they have not been able to establish any contact with the Indian embassy. Scared and anxious, these students are fearful of moving even an inch out of the basement as they continue to hear explosions every few hours.

-Agency

Utopia or Abyss of Perdition? A World in Dire Peril

*Dr. A. K. Merchant**

The demolition of the Berlin Wall had evoked expectations of a peaceful world only to be shattered by the devastating start of the 21st century due to 9/11—bombing of World Trade Centers—in September 2001. Alas, whatever unique moral victories won by sections of the society working in tandem with government agencies to contain the current global health pandemic has hardly instilled much positivity in human behaviour. Instead, what we are witnessing is a chilling, Hobbesian version of human nature. It accentuates hostility, not trust; selfishness in lieu of generosity.

Brinkmanship of misguided world leaders, decision-makers, who could cast our world into an abyss of oblivion and doom or lead us into a golden era of prosperity and peace; how should we commit ourselves when the very survival of the human race and all that sustains life on earth is at stake.

All of us are earnestly longing for the peaceful resolution of conflicts—be it in the home, in the community, in the nation, in the world—it is clear that the most perfect process will not suffice unless certain deep-seated social, economic and political ills are adequately addressed.

Despite the long and tortuous journey in evolving mechanisms, establishing structures, working out methodologies and implementation of procedures for the elimination of conflicts and ensuring peace where are we? Numerous times, it was pure luck that has saved humanity from near total annihilation due to belligerent posturing of global leaders or accidents in the nuclear fail-safe mechanisms of the strategic arsenals of superpowers. Clearly, the existing world order, based on the sovereignty of nations, has exposed the failure of the highest leadership in resolving current global issues. Crises are present on every front. No nation can stand independent of the affairs affecting every other nation. Economically, national markets are dependent on fluctuations in the comparative valuation of currencies, though there is little international control. The concentration of wealth is highly polarized—1% of the population controlling the rest of 99%. Poor nations desperately struggling in their search for ways and means to provide basic necessities for its over-crowded populations. These nations stagger under a growing debt with precious resources being diverted for addressing fratricidal conflicts, unforeseen natural disasters, man-made calamities, to list a few; major defaults could result in world-wide economic collapse.

The planet is bristling with weapons of mass destruction, their lethality increasing day by day. Nations spend colossal amounts on defence of their territories, fearful of hegemonistic powers. Regional wars, cross border terrorism have erupted into wider conflicts, while the ominous shadow of global nuclear war raises doubts about humanity's survival. Even if the big powers are able to maintain their delicate stalemate, the proliferation of nuclear weapons to other nations enhances the potential for global disaster. Efforts of organizations and institutions supported by countless millions for the total abolition of nuclear weapons and other weapons of mass destruction have not succeeded. Rather the uncertainty has increased with the spread of terrorism, disrupting social stability. How does a nation strike back when the enemy is not another nation, but a formless group that blends into the population?

Based on one's study of the sacred scriptures of different religions and exchange of secular knowledge in contemporary discourse it is evident that flaws in the prevailing global order coupled with the inability of sovereign states organized as United Nations to exorcise the spectre of war, the threatened collapse of the international economic order, the spread of anarchy and terrorism, the intense suffering which these and other afflictions are daily causing to increasing billions portend a civilization doomed to perish.

If one were to step back and understand the historical processes it becomes apparent that human social evolution has moved through the stages of family life, tribal unity, the creation of city-states, kingdoms and empires, the development of nation-states. It now stands on the threshold of the consummation of this evolution: world government. For Members of the Bahá'í Faith have been advocating for nearly a century the creation of "… a world super-state [that] must needs be evolved, in whose favour all the nations of the world will have willingly ceded every claim to make war, certain rights to impose taxation and all rights to maintain armaments, except for purposes of maintaining internal order within their respective dominions…" Such a framework would ensure "a world organically unified in all the essential aspects of its life, its political machinery, its spiritual aspiration, its trade and finance, its script and language, and yet infinite in the diversity of the national characteristics of its federated units." This is no small task. The federated order envisioned parallels the four estates that constitute a democratically established nation-state: executive, legislative, judicial and the media. Without undermining the existing order, subverting national loyalty, or suppressing diversity of ethnic origin, language, tradition, or habit, such a global system would inculcate a wider loyalty and promote larger aspiration than any that has animated the human race. It would foster global citizenship leading to subordination of national impulses to the imperative claims of a unified world.

We are losing not just time but the margin of planetary safety, as the world crosses tipping points of environmental risks—excessive deforestation and soil erosion; pollution of air, water and ground; greenhouse gas emissions, species extinction, ocean acidification, to which may be added over population, growing by 80-millions or more annually; the torrid economic growth afflicting global financial systems and other threats caused by disruptive technologies. The achievement of organic and spiritual unity by the comity of nations and the peoples of the world as described in the earlier paragraph would be regarded as the sign of the maturity of humankind and mark the inception of world civilization and culture—Ram Rajya or the Kingdom of God--long anticipated by sages, and prophets of old, and prophesied in the sacred scriptures of extant religious systems. Will humankind realize this utopian dream or sink into the abyss of perdition is the choice before all who inhabit the earth?

*The author is an independent researcher and social worker based in New Delhi. He can be contacted at akmerchant@hotmail.com / 9810441360

अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बूथ विजय सम्मेलन

यूपी में 5वें फेज की वोटिंग के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी पहुंचे। यहां उन्होंने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के मैदान में 20 हजार बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। भोजपुरी में संवाद के साथ संगठन के लोगों का धन्यवाद किया। कहा कि लोगों की बातें दिल को छू गई, इसका नाम बूथ विजय सम्मेलन है। वे यहां गोल्फ कार्ट में सवार होकर पहुंचे थे। पीएम मोदी ने अखिलेश यादव का नाम लिए बगैर उन पर बड़ा हमला किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, श्हम सभी ने देखा कि भारत की राजनीति में कुछ लोग किस हद तक नीचे गिर गए हैं। मैं किसी की व्यक्तिगत आलोचना करना पसंद नहीं करता और ना ही किसी की आलोचना करना चाहता हूं। लेकिन जब सार्वजनिक रूप से काशी में मेरी मृत्यु की कामना की गई, तो वाकई मुझे बहुत आनंद आया, मेरे मन को बहुत सुकून मिला।

हमें लगा कि मेरे घोर विरोधी भी देख रहे हैं कि काशी के लोगों का मुझ पर कितना स्नेह है। मैं यह जान गया कि मेरी मृत्यु तक न काशी के लोग मुझे छोड़ेंगे और न मैं उनकी सेवा करना छोड़ूंगा। बाबा विश्वनाथ के भक्तों की सेवा करते–करते अगर मैं चला जाऊं, तो इससे बड़ा सुख और क्या होगा? उन घोर परिवारवादियों को क्या पता कि यह जिंदा शहर बनारस है। यह शहर मुक्ति के रास्ते खोलता है। बनारस अब देश के लिए गरीबी और अपराध से मुक्ति के द्वार खोलेगा।

मुझ जैसे कार्यकर्ता को पार्टी ने बनारस भेजा। बनारस मुझे मिल गया और मैं बनारस का ही होकर रह गया। महादेव और मां गंगा के चरणों में बैठने के साथ काशी की सेवा का पुण्य लाभ पार्टी ने ही दिया है। आज हमें काशी के स्वर्गीय डोम राजा जगदीश चौधरी की कमी महसूस हो रही है। उनका स्नेह ऐसा रहता था कि मैं अभिभूत हो जाता था। घोर परिवारवादी लोग हमारा मुकाबला नहीं कर सकते हैं। भाजपा संगठन शक्ति और कार्यकर्ताओं के बल पर चलने वाला दल है। इसके पूर्व बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधन के पूर्व मंच पर केशव प्रसाद मौर्य ने सबसे पहले संबोधन शुरू किया और पीएम का स्वागत करते हुए सभी का आभार भी जताया। इस दौरान पार्टी स्तर पर बूथ कार्यकर्ताओं का भी उन्होंने उत्साह बढ़ाया।

–नौशाद खान, आईटीएन

क्या परमात्मा को पहचानने से होगा सारे दुखों का अंत?

सबसे बड़ा दुख जो बहुत कम लोगों को होता है, उस दुःख का आभास भी लोगों को नहीं है और वह है अध्यात्म का दुःख। अध्यात्म का दुःख अपने आप को न जान पाना है। चूंकि व्यक्ति आध्यात्मिक नजर से जीवन देखता नहीं तो उसको इस दुःख का पता भी नहीं है। इसी तरह पांच सुखों में अध्यात्म सुख भी होता है। प्रभु का ध्यान अध्यात्म सुख है।

समाज में हर तरह के विचार के व्यक्ति होते हैं। कुछ पैसे की नजर से ही हर स्थिति, परिस्थिति और व्यक्तियों को देखते हैं। कुछ शारीरिक नजर से हर समय, हर किसी को परखते हैं। कुछ लोग भावुकता के पलड़े में सबको तौलते हैं। बुद्धि से विचार करने वाले तो कम ही होते हैं। सबसे कम होते हैं अध्यात्म की नजर से संसार को देखने वाले। इसका अर्थ धार्मिक नजर नहीं है। आध्यात्मिक पहलू का अर्थ है जीवन को यथार्थ से देखना।

जरा सोचिए ! इस संसार में पांच तरह के सुख हैं। धन का, तन का, मन का, बुद्धि तथा अध्यात्म का। आपने मिठाई खरीदी तो धन का सुख, खाई तो तन का सुख, पोते–पोती को दी तो मन का सुख, स्कूल में प्रथम आए तो बुद्धि का सुख इत्यादि। परंतु प्रभु का ध्यान अध्यात्म के सुख के क्षेत्र में आता है। पांच तरह के दुःख भी होते हैं। आपके हजार रुपए खो गए तो धन का दुःख , शरीर का कोई अंग खराब हो गया तो तन का दुःख, छोटी उम्र में परिवार में कोई व्यक्ति गुजर गया तो मन का दुःख, पर कोई व्यक्ति परिवार में मानसिक संतुलन खो गया तो बुद्धि का दुःख, परंतु सबसे बड़ा दुख जो बहुत कम लोगों को होता है उस दुःख का आभास भी लोगों को नहीं है और वह है अध्यात्म का दुःख। अध्यात्म दुःख अपने आप को न जान पाना है। चूंकि व्यक्ति आध्यात्मिक नजर से जीवन देखता नहीं तो उसको इस दुःख का पता भी नहीं है।

अध्यात्म की नजर से देखें तो वास्तविकता में न सुख है, न दुख है। सुख–दुःख तो मात्र एक विचार है। एक के लिए एक घटना दुःख का संदेश लाती है, तो दूसरे लिए वही घटना भविष्य के लिए सुख की आहट देती है। अब हम बात करेंगे मीडिया की खबरों पर! निरूसंदेह हमें खबरों को हर स्तर से देखना चाहिए। पैसा, स्वास्थ्य, परिवार, समाज, ये हमारे अभिन्न अंग हैं। परंतु सबसे विशाल तो अध्यात्म का पहलू है। यह मानना बचकाना होगा कि हर खबर सिर्फ एक स्तर पर हिट होती है। ऐसा नहीं होता। हर खबर का असर व्यापक होता है। वह नजर बाद में आए पर उसकी पहुंच बहुत ऊंची और गहरी होती है। एक खबर दुःख दायी मालूम पड़ती है। परंतु उससे अनेक लोगों को सुख मिलता होगा और शायद एक खबर सुखदायी मालूम पड़ती हो, लेकिन उससे अनेक लोगों के घर में दुःख का माहौल हो जाता होगा। किसी भी खबर का असर अच्छा या बुरा नहीं होता। हर खबर को साक्षी भाव से देखिए। तो उतनी परेशानी नहीं होगी जितनी बनाई जाती है।

उदाहरण के लिये शहर में डेंगू फैला। यह खबर दुःख दायी, भयंकर और हैरान करने वाली महसूस होती है। कोई दोष लोगों को देगा तो कोई नेताओं को, तो कोई सफाई कर्मचारियों इत्यादि को। परंतु कितने लोगों की जिंदगी बन जाएगी। यह बहुत कम लोग देखते हैं। डेंगू फैला तो बकरी का दूध बेचने वालों की, पपीता बेचने वालों की, डॉक्टरों की, लैब वालों की, और उनके साथ अनेक लोगों की तो पौ–बारह हो जाएगी। अक्सर ये सोचता हूं कि जो अंतिम संस्कार का सामान बेचता होगा उसके घर में खुशी कब आती होगी। वह भी जब अपने गल्ले की आरती करता होगा तो कहता होगा कि सुख संपत्ति घर आवे। कब आएगी उसके घर में सुख संपत्ति? कब आएगा उसके जीवन में आराम? जब शहर में ज्यादा मृत्यु होगी। इसलिए हर खबर को मात्र एक नजर से मत देखिए। सांसारिक खबर पर आध्यात्मिक नजर भी रखनी चाहिए। एक बार आपने साक्षी भाव से संसार की हर खबर को देखना शुरू कर दिया तो भयंकर से भयंकर दुःख में भी आप डोलेंगे नहीं। सोचिएगा इस बात पर!

आचार्य शिवेंद्र नागर
विवेक निकेतन एजुकेशनल ट्रस्ट
सौजन्य : दैनिक भास्कर

SUBSCRIPTION FORM
TIMES OF PEDIA

Issue	Subscription Price	Years
52	250/-	1
104	500/-	2
260	1,300/-	5
520	2,600/-	10
--	5,000/-	Life

Name :...
Address :...
....
....
Email:..
Contact Phone No...
for donation ☐ /life ☐ /10 yrs ☐/5 yrs☐subscription
The sum of Rupees.................................. (Rs.........../-)
through cheque/DD No................................dt................

Fill the above form neatly in capital letters and send it to us on the following address :
Times of Pedia, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025
or email : **timesofpedia@gmail.com**

Also Send us your subscription, membership, donation amount in favour of Times of Pedia, New Delhi
Punjab National Bank,Nanak Pura Branch,
New Delhi-110021
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

Ending Someone's thirst is the Biggest Deed of Humanity

ADVERTISEMENT TARIFF
TIMES OF PEDIA

Size/Insertion Single	B&W (Rs)	4 Colour (Rs)
Full Page (23.5 x 36.5 cm)	30,000/-	1,00,000/-
A4 (18.7 x 26.5 cm)	20,000/-	60,000/-
Half Page (Tall-11.6 x 36.5 cm)	18,000/-	50,000/-
Half Page (wide-23.5 x 18 cm)	8,000/-	50,000/-
Quarter Page (11.6 x 18 cm)	10,000/-	28,000/-
Visiting Card size (9.5 x 5.8 cm)	3,000/-	10,000/-

MECHANICAL DATA:

Language: English, Hindi and Urdu

Printing: Front and Back - 4 Colours , Inside pages - B&W

No. of Pages: 12 pages (more in future)

Price: Rs. 3/-

Print order: 25,000

Periodicity: Weekly

Material details: Positives/Format of your advertisements should reach us 10 days before printing.

Note: 50% extra for back page, 100% extra for front page

Please Add Rs. 10 for outstation cheques.

50% advance of total add cost would be highly appreciable, in case of one year continue add. Publication cost will reduce 50% of actual cost.

Bank transactions details of TIMES OF PEDIA
Send your subscriptions/memberships/donations etc. (Cheques/DD) in favour of TIMES OF PEDIA New Delhi
Punjab National Bank,Nanak Pura Branch , New Delhi-110021
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

Youngest Sikh Billionaire Evan Luthra visited World Sikh Chamber of commerce Office.

Youngest Sikh Billionaire Evan Luthra visited World Sikh Chamber of commerce Office.

Evan Luthra Crypto and tech investor, who is 27 years old and youngest Sikh Billionaire visited WSCC office in Lajpat Nagar to meet its members.

WSCC is the first, “World-Wide Hybrid Networking platform”. WSCC is a non-Profit Sikh Networking Platform Comprising Sikh Businessmen, Industrialists, Professionals, Entrepreneurs & Start Ups. WSCC through its Young and energetic Sikh businessmen, HNI's, professionals and other startups are organising regular Mentor sessions with prominent personalities from different with sole motive to promote entrepreneur ship among new generation and support business community.

The Government of India has regularised Crypto by imposing tax on it. India is Top 5 investor in crypto and Evan luthra is a young enthusiastic in this field. He was specially invited by Parmeet singh chadha, President of WSCC to meet members and learn from his past experiences and future trends. Dr.Chadha appraised Evan luthra for his vision and asked various questions to clear the doubts of the members.The members gathered in large number to hear him out and took selfies.

Evan luthra is a Serial Entrepreneur & Angel Investor. He is FORBES 30 UNDER 30. He has Built and sold Multiple companies.

Evan said "previously we just had stock as an option to invest, and today we have 10 different options like NFTS, METAVERSE, DEFI, to invest. If u still think you are unlucky, no you are not. You are Lazy”

He added everything will be online in next 3 years and change is must. He is open for any JV with WSCC for growth of community and society. Dr.Chadha added "Together with WSCC lets bring a paradigm shift in our future"As our Honourable Prime Minister says Youth is the future of India, so let us motivate youth to change the country.

WSCC will take a delegation to government of India for systematic upgradation to block chain technology and digitisation for transparency govt functioning with the support of Evan's vast knowledge and global experience. Dr. Sameer said that “It is high time to work towards promoting holistic treatment & improving the general health and immunity thereby encouraging focus on self-care through 'holistic health and well-being' measures.

It can only be done and successfully achieved by participation of Public as well as the stakeholders. We are happy to collaborate with Sewa Dal and would surely look forward to it.”

“Humare Bujurg Humari Jimmedari” Campaign by Star Imaging Path Lab & Delhi Police West District.

Star Imaging & Delhi Police West District organized a health & wellness camp to serve the Senior Citizens during Police Week. Diagnosis of Lifestyle disease through blood tests as well as Eye & Dental Care diagnostic services were extended to Senior Citizens so as to provide them better preventive health care, supervision and help them to lead a healthy life. Dr. Sameer Bhati, Director, Star Imaging & Path Lab said that It is important to understand the needs of Old age and lend a hand of emotional attention as well as providing care to the elder people. Through such camps, we would love to extend the specialized preventive care assistance to the Old age people so that early diagnosis and early treatment can be offered to them helping them to lead a comfortable life .”

-Sunit Narula

Star Imaging Path Lab collaborates with Shaheed Bhagat Singh Sewa Dal for serving the society.

Star Imaging & Path Lab joined hands with Shaheed Bhagat Singh Sewa Dal for serving the humanity and carry out welfare activities in the Community. A MOU signing ceremony was held at Star Imaging & Path Lab, Tilak Nagar Delhi. The ceremony marked the gracious presence of Dr. Sameer Bhati, Director, Star Imaging & Path Lab, Mr. Jitender Singh Sonu , President, West Delhi, Mr. Harjot Shah singh, G. Secretary, West Delhi, Mr. Ramandeep Singh, Patron, West Delhi, Mr. Amrinder Singh Bawa Head Ambulance and Blood Donations cell, West Delhi & Mr. Neeraj kumar Vice President West Delhi. Both the organizations are constantly engaged in organizing Health Check Up Camps, Blood Donation Camps like health care facilities for underprivileged and needy people of the Society.

Moreover both the Organisation has together pledged to carry out activities like diagnosis of Blood Sugar, Blood Pressure, Cholesterol, Weight, other diagnostic tests & provide Doctor Consultation for identifying people in an apparently healthy population who are at higher risk of a health problem or a condition, so that an early treatment or intervention can be offered and thereby reduce the incidence and/or mortality of the health problem or condition within the population.

Dr. Sameer said that “It is high time to work towards promoting holistic treatment & improving the general health and immunity thereby encouraging focus on self-care through 'holistic health and well-being' measures.

It can only be done and successfully achieved by participation of Public as well as the stakeholders. We are happy to collaborate with Sewa Dal and would surely look forward to it.”

Shri Deepak Gupta assumes charge as Director (Projects), GAIL

Shri Deepak Gupta has assumed charge as Director (Projects) of GAIL (India) Limited. Shri Gupta is a Mechanical Engineer, a Delhi College of Engineering alumnus, with more than 31 years of rich and diverse experience in Oil and Gas Sector encompassing Project Management, Construction Management and Business Development functions. GAIL is implementing the expansion of its pipeline network by over 5,600 km at an investment of over Rs 25,000 crore in the next few years. GAIL owns cross country network of natural gas pipeline operations for nearly 14,000 km. GAIL owns and operates over 2,000 km network of LPG transmission pipelines and has five Gas Processing Units producing LPG and Liquid Hydrocarbons. Shri Gupta was working as Executive Director (Projects), Engineers India Limited (EIL), before assuming his new post.

He is a certified Project Management Professional (PMP) by the PMI, USA and has comprehensive and extensive experience in Project Management of Refinery, Petrochemical and Pipeline Projects from concept to commissioning and has led the execution of several successful projects in India in all modes of project implementation. He has successfully collaborated with multi-disciplinary and cross-functional teams across geographies for implementing the highly complex and challenging Oil and Gas Projects.

-Sunit Narula

वोडाफोन आइडिया फाउन्डेशन के 'जादू गिन्नी का' वित्तीय साक्षरता प्रोग्राम ने सीएससी ग्रामीण स्तर के उद्यमी गोकुल चंद सैनी को सक्षम बनाया

सैनी ने राजस्थान के अलवर जिले में 1.25 लाख से अधिक ग्रामीणों को शिक्षित किया

अलवर ,25 फरवरी 2022 . 36 वर्षीय गोकुल चंद सैनी राजस्थान के अलवर जिले से हैं। वे पॉलिटिकल साइंस और ज्योग्राफी में पोस्ट–ग्रेजुएट डिप्लोमा हैं और उन्होंने सोशल वर्क में मास्टर्स किया है। सैनी ने सरकारी नौकरी के साथ अपना करियर शुरू किया। हालांकि जल्द ही उन्होंने इस नौकरी से इस्तीफा दे दिया क्योंकि वे समाज सेवा करना चाहते थे।

सैनी 2015 में इलेक्ट्रोनिक्स एवं आईटी मंत्रालय के तहत सीएससी एकेडमी में शामिल हो गए, जहां उन्हें डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता पर आधारित विभिन्न प्रोग्रामों के बारे में पता चला। उन्हें लगा कि यह उनके जुनून को पूरा करने के लिए सही मंच है और उन्होंने ग्रामीण स्तरीय उद्यमियों के सीएससी नेटवर्क में अपना पंजीकरण करवा लिया। उचित प्रशिक्षण पाने के बाद सैनी ने अलवर के बंसूर के आस–पास महिला स्वयं–सहायता समूहों के लिए ने डिजिटल वित्तीय साक्षरता प्रोग्राम में अपना पहला प्रोजेक्ट किया।

गांवों में अपने दौरे के दौरान उन्होंने पाया कि ग्रामीणों, खासतौर पर महिलाओं को कई वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वे धन प्रबन्धन के बारे में नहीं जानती हैं। उन्होंने ऐसी महिलाओं की कहानियां सुनी थी जिन्होंनें अपने बच्चों को पढ़ाने और अन्य जरूरतों के लिए ऋण लिए थे। लेकिन समय पर पैसा नहीं चुकाने के कारण उन्हें धमकाया जा रहा था। हालांकि सैनी इन चुनौतियों से घबराए नहीं और मजबूत इरादे के साथ उन्होंने ग्रामीण इलाकों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया।

पिछले सात सालों में वीएलई के रूप में अपनी यात्रा के दौरान सैनी ने वोडाफोन आइडिया के 'जादू गिन्नी का' प्रोग्राम के जरिए वित्तीय साक्षरता पर ध्यान केन्द्रित किया और वित्तीय प्रबन्धन की आवश्यकता के बारे में जागरुकता फैलाई। 'जादू गिन्नी का' का संचालन लर्निंग लिंक्स फाउन्डेशन के साथ साझेदारी में किया जाता है। यह प्रोग्राम लोगों को वित्तीय अवधारणाओं जैसे निवेश, वित्तीय नियोजन, डिजिटल फाइनैंसिंग टूल्स आदि के बारे में शिक्षित बनाता है। यह प्रतियोगिता साधारण स्टोरीटैलिंग प्रारूप पर आधारित होती है और इसमें रोचक गेम्स और क्विज भी शामिल होते हैं।

सैनी के अनुसार 'जादू गिन्नी का' प्रोग्राम ने महिलाओं को सशक्त बनाया है।आज आस–पास के गांवों की 5220 से अधिक महिलाओं ने आगे बढ़कर स्वयं –सहायता समूह बनाए हैं। एक साथ मिलकर वे लगभग चार करोड़ की बचत कर चुकी हैं।

सैनी की डिजिटल फाइनैंशियल लिटरेसी परियोजना बेहद कारगर साबित हुई, उन्होंने हाल ही में वोडाफोन आइडिया फाउन्डेशन के 'जादू गिन्नी का' प्रोग्राम द्वारा लॉन्च की गई टेक्नोलॉजी से लैस मोबाइल वैन को संचालित करने के लिए चुना गया।

इस मोबाइल वैन में लैपटॉप, एलसीडी स्क्रीन, स्पीकर और जनरेटर हैं। इसके जरिए अंसारी ऑडियो एवं विज़ुअल कंटेंट के माध्यम से डिजिटल वित्तीय साक्षरता का संदेश देते हैं। मोबाइल वैन क्लासरूम ऑन व्हील्स की भूमिका भी निभाती है, जिसके माध्यम से ग्रामीणों को लैपटॉप के द्वारा वित्तीय साक्षरता पर आधारित रोचक क्विज में हिस्सा लेने का मौका भी मिलता है। 'जादू गिन्नी का' प्रोग्राम के तहत सैनी और उनकी टीम ने 148 से अधिक गांवों का दौरा किया और 1.25 लाख युवाओं को वित्तीय साक्षरता पर शिक्षित किया है।

वे दूर–दराज के गांवों में 140 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया है और उन्हें वित्तीय रूप से साक्षर बनाया है। आज ये महिलाएं खुद वीएलई हैं। उन्होंने बहुत से ग्रामीणों को जीरो बैलेंस बैंक खाते खोलने, निवेश एवं बीमा के आवेदन के लिए मदद की। उन्होंने ग्रामीणों को नकदरहित लेनदेन में भी सहयोग प्रदान किया है।

सैनी ने कोविड महामारी के दौरान मोबाइल वैन के माध्यम से कोविड जागरुकता अभियानों का आयोजन भी किया, मास्क और सैनिटाइजर बांटे। मोबाइल वैन का उपयोग कर उन्होंने जरूरतमंद परिवारों तक सूखा राशन भी पहुंचाया।

जब उनसे पूछा गया कि भविष्य में वीएलई के रूप में वे क्या करेंगे, उन्होंने उत्साहित होकर कहा ''मैं भारत में बुनियादी स्तर पर बड़ा बदलाव लाना चाहता हूं।''

–आईटीएन

मोदी समूह के अध्यक्ष श्री भूपेंद्र कुमार मोदी की ओर से 810वें वार्षिक उर्स मुबारक को चिह्नित करने के लिए दरगाह अजमेर शरीफ में पहली बार चादर मुबारक की प्रस्तुति

अध्यक्ष श्री भूपेंद्र कुमार मोदी एसबी के नेतृत्व में एक वैश्विक मोदी समूह प्रतिनिधिमंडल ने मोदी समूह के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अजमेर दरगाह शरीफ का दौरा किया। हज के पवित्र मजार शरीफ को सम्मानित करने के हिस्से के रूप में सूफी सेमा कव्वाली जुलूस के साथ निजाम गेट के रूप में। ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती (आरए) ने एक बड़े लाल मखमली रंग का घिलाफ चादर मुबारक पेश किया, जिसे विशेष रूप से बेदाग चांदी और सोने के धागे से डिजाइन किया गया था। जरदोशी का काम धन्य अवसर को दर्शाता है। दरगाह अजमेर शरीफ में चल रहे 810वें वार्षिक उर्स मुबारक समारोह के शुभ अवसर को चिह्नित करने के लिए चादर के केंद्र में। गौरतलब है कि इस वर्ष उर्स मुबारक की पहली चादरधघिलाफ पेश की गई है, जो श्री बीके मोदी द्वारा व्यक्तिगत रूप से पवित्र अजमेर दरगाह शरीफ उर्स समारोह की शुरुआत में पेश की जाती है, जिसके बाद भारत के माननीय प्रधान मंत्री, राजस्थान के मुख्यमंत्री के साथ–साथ अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों और देश भर के प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं, केंद्रीय मंत्रियों और राज्य के राज्यपालों के साथ।

दरगाह अजमेर शरीफ के अंदर मौजूद हजारों श्रद्धालुओं को लंगर परोसने वाले मोदी समूह की ओर से शाही देग चढ़ाने की विशेष पेशकश को भी मोदी परिवार और मोदी समूह की ओर से डॉ एम ने सम्मानित किया.

हाजी सैयद सलमान चिश्ती, गद्दी नशीन – दरगाह अजमेर शरीफ और चिश्ती फाउंडेशन के अध्यक्ष चिश्ती सूफी समुदाय के अन्य वरिष्ठ सदस्यों के साथ श्री भूपेंद्र कुमार मोदी, सुश्री शाजिया इल्मी, श्री सतीश डोगरा, श्रीमती प्रीति साहेबा, सुश्री पूजा साहेबा, सुश्री पूजा साहेबा का स्वागत किया। शीतल साहेबा और मोदी समूह के अन्य वरिष्ठ प्रतिनिधिमंडल ने अजमेर दरगाह शरीफ का दौरा किया, उसके बाद जियारत का दौरा किया और अजमेर दरगाह शरीफ के शाही कव्वालों की कव्वाली की प्रस्तुति, चिश्ती फाउंडेशन के प्रधान कार्यालय में – चिश्ती मंजिल सूफी खानका, दरगाह अजमेर शरीफ के बगल में।

हाल ही में दुबई में श्री बीके मोदी साहब के 73वें जन्मदिन समारोह को चिह्नित करने के लिए उन्हें हाजी सैयद सलमान चिश्ती द्वारा चिश्ती फाउंडेशन अजमेर शरीफ की ओर से उनकी वैश्विक उपस्थिति, समुदायों की सेवा करने और शानदार स्वास्थ्य देखभाल पहल के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। स्वस्थ जीवन शैली और वैश्विक दान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम।

एक भारतीय मूल के उद्योगपति, डॉ भूपेंद्र कुमार मोदी, वास्तव में एक वैश्विक नागरिक और व्यवसायी हैं, जिन्हें भारत में डिजिटल क्रांति लाने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। डॉ मोदी एक व्यापार मुगल और डिजिटल अग्रणी हैं जो भारत में प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं और देश में दूरसंचार क्रांति का हिस्सा थे – कार्यालय स्वचालन से और अब अन्य देशों में डिजिटल क्रांति से। वह पीएचडी रखते हैं और एक सामाजिक उद्यमी और निवेशक हैं, उद्यमी, लेखक, फिल्म निर्माता, परोपकारी और सच्चे वैश्विक नागरिक अंतरिक्ष और स्वास्थ्य क्षेत्र को भविष्य मानते हैं। उनके अनुसार, अंतरिक्ष अन्वेषण हमें नवाचारों और आविष्कारों पर ज्ञान प्रदान कर सकता है।

डॉ बीके मोदी एक कहानी भारतीय व्यवसायी कबीले से ताल्लुक रखते हैं। उनकी पूर्ववर्ती मोदी टेल्स्ट्रा 1995 में भारत में मोबाइल टेलीफोनी शुरू करने वाली पहली कंपनी थी। जेरोक्स और कॉन्टिनेंटल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ उनके कई संयुक्त उपक्रमों के लिए उन्हें कभी श्संयुक्त उद्यम मोदीश के रूप में जाना जाता था। कुलपति अब उच्च जीवन के एक और उद्यम पर काम कर रहे हैं जिसमें शेयर चार्टर्ड विमानों और नौकाओं में वृद्धि देखी जा रही है। "निजी यात्रा महामारी के तहत समृद्ध है। बहुत सारा पैसा खर्च किए बिना यात्रा करते समय समय दक्षता, गोपनीयता और पूर्व सुविधा की तुलना में कुछ भी नहीं है। हम एक साथ श्हाई लिविंगश वेंचर पर काम कर रहे हैं ताकि लक्जरी यात्रा के स्पेक्ट्रम में विकल्पों की एक विशाल श्रृंखला प्रदान की जा सके।ष

इन सभी पहलों को मजबूत आध्यात्मिक आधार के साथ समर्थित करने की आवश्यकता है और भारत वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सांसारिक मामलों और आध्यात्मिक प्रतिबिंबों के बीच जुड़ाव के लिए दुनिया को सही अवसर देता है। वैश्विक मानव परिवार को साकार करने की दिशा में डॉ मोदी की व्यस्तता और जो पूरी तरह से एक–दूसरे से जुड़ी हुई है, वैश्विक परिवार की सेवा करने के लिए उनके गहरे करिश्माई नेतृत्व, प्रतिबद्धताओं, निरंतरता और करुणा को दर्शाती है।

अजमेर दरगाह शरीफ में, गहरे आध्यात्मिक जुड़ाव और सेवा प्रतिबद्धताओं के साथ, डॉ बीके मोदी ने अजमेर शरीफ जैसी जगह के साथ मानव परिवार को अपनी आध्यात्मिक कॉलिंग के साथ जोड़ने में सक्षम होने की अपनी इच्छा साझा की, जिसमें सभी सात महाद्वीपों के लोगों के बीच वैश्विक आध्यात्मिक उपस्थिति है। हमारे ग्रह पृथ्वी को वैश्विक स्वीकृति का हिस्सा होना चाहिए और इस प्रकार वैश्विक कनेक्टिविटी के साथ एक पवित्र वापसी केंद्र अजमेर शरीफ के लिए जरूरी है जिसे अजमेर शरीफ को विश्व की सूफी राजधानी बनाने के लिए राज्य और केंद्र प्रशासन के साथ काम किया जाना चाहिए।

–आईटीएन

गोवा की आजादी: क्या देरी के लिए नेहरू जिम्मेदार थे?

– राम पुनियानी

सन् 2014 के लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान मोदी–भाजपा जो बातें कहते थे उनमें से एक यह भी थी कि जनता ने कांग्रेस को 60 साल सत्ता में रखा. अब जनता हमें 60 महीने दे और फिर देखे कि हम देश को किस तीव्र गति से विकास पथ पर अग्रसर करते हैं. स्वाधीनता से लेकर सन् 2014 तक कांग्रेस 49 वर्ष केन्द्र में सत्ता में रही. कई दूसरी सरकारें भी इस बीच सत्तासीन हुईं जिनमें इन्द्र कुमार गुजराल और देवेगौड़ा की सरकारों के अलावा अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार भी थीं. अतः यह कहना तथ्यों के विपरीत है कि कांग्रेस ने 60 वर्षों तक देश पर राज किया है. संभवतः भाजपा नेताओं ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि 60 वर्ष और 60 महीने की तुकबंदी है.

पिछले 7–8 सालों के मोदी–भाजपा शासन में सामाजिक विकास के सभी सूचकांकों में गिरावट आई है. नोटबंदी से देश में हाहाकार मचा और जीएसटी ने छोटे व्यापारियों को बर्बादी की कगार पर ला खड़ा किया. कोरोना के प्रसार को नियंत्रित करने के नाम पर जो भयावह लॉकडाउन देश में लगाया गया उससे लाखों लोग अपनी आजीविका खो बैठे. विकास का कहीं दूर–दूर तक पता नहीं है और युवा दुःखी व आक्रोशित हैं क्योंकि उनके हिस्से में बेरोजगारी के सिवाए कुछ नहीं आया है.

प्रजातांत्रिक अधिकारों, अभिव्यक्ति की आजादी, धार्मिक स्वातंत्रता, पोषण, स्वास्थ्य आदि जैसे विषयों से संबद्ध सूचकांकों में जबरदस्त गिरावट आई है. चुनाव आयोग, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) एवं केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) सरकार के हाथ की कठपुतली बन गए हैं. न्यायपालिका की निष्पक्षता पर भी प्रश्नचिन्ह लगने लगे थे परंतु पिछले कुछ समय से उसमें सुधार परिलक्षित हो रहा है. इन विकट परिस्थितियों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की हर समस्या के लिए जवाहरलाल नेहरू को दोषी ठहराते हैं. मोदी ने हाल में कहा कि गोवा के देरी से (देश की आजादी के 14 साल बाद) स्वतंत्रता हासिल करने के लिए नेहरू की कमजोर नीतियां जिम्मेदार थीं. गोवा को देश की आजादी के समय, अर्थात 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र करवाया जा सकता था. सन् 1955 में 20 सत्याग्रहियों की मौत के बावजूद नेहरू ने कोई कदम नहीं उठाया. मोदी इस मुद्दे पर तो बहुत मुखर हैं किंतु चीन द्वारा भारत के एक बड़े भूभाग पर कब्जा कर लेने के मामले में वे चुप रहते हैं.

गोवा के उपनिवेश बनने और फिर स्वतंत्र होने का क्या इतिहास है? गोवा को सन् 1961 में भारतीय सेना ने 'आपरेशन विजय' के तहत 26 घंटों में स्वतंत्र करवा लिया था. गोवा को सन् 1510 में पुर्तगाल ने अपना उपनिवेश बनाया था. पुर्तगाली सेना ने बीजापुर के सुल्तान आदिल शाह को हराकर गोवा पर कब्जा किया था. यह अंग्रेजों द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया शुरू करने के बहुत पहले की बात है. पुर्तगालियों ने कई सदियों तक गोवा पर शासन किया. उनका शासन अत्यंत कड़ा था. पुर्तगालियों की बड़े पैमाने पर खिलाफत पहली बार सन् 1718 में हुई जब वहां के पॉस्टरों के एक समूह ने टीपू सुल्तान की मदद मांगी और पुर्तगाली सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया. इसे पिंटो षड़यंत्र कहा जाता है. यह विद्रोह बुरी तरह असफल हुआ और इसके कर्ताधर्ता पॉस्टरों को अमानवीय यातनाएं दी गईं.

सन् 1900 में एल. मेनेजेज ब्रेगांजा ने पुर्तगाली भाषा में होराल्डो नामक अखबार गोवा से निकालना शुरू किया. यह अखबार पुर्तगाल का आलोचक था. सन् 1917 में गोवा में सेंसरशिप लागू कर दी गई. इससे आमजनों में असंतोष बढ़ा. सन् 1928 में टी. ब्रेगांजा ने गोवा कांग्रेस पार्टी का गठन किया. सन् 1946 में राममनोहर लोहिया ने गोवा की मुक्ति के लिए सत्याग्रह किया. उन्हें 18 जून को गिरफ्तार कर लिया गया. इस दिन को गोवा क्रांति दिवस के रूप में मनाया जाता है. गोवा के एक प्रमुख मैदान का नाम लोहिया के नाम पर रखा गया है.

इस सत्याग्रह के बाद गोवा में नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया. इसमें भाग लेने वाले क्रांतिकारी थे जिनमें पुणे के प्रसिद्ध पहलवान नाना काजरेकर, लोकप्रिय संगीत निदेशक सुधीर फड़के आदि शामिल थे. इन लोगों ने युनाईटेड फ्रंट ऑफ लिबरेशन के झंडे तले आजाद गोमांतक दल का गठन किया. यह दिलचस्प है कि लब्धप्रतिष्ठित गायिका लता मंगेशकर ने गोवा की स्वतंत्रता के लिए धन इकट्ठा करने हेतु पुणे में आयोजित एक संगीत कार्यक्रम में हिस्सेदारी की थी.

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पुर्तगाल के तानाशाह सलाजार ने देश के संविधान को संशोधित कर गोवा को पुर्तगाल का अभिन्न हिस्सा घोषित कर दिया. इसके अलावा पुर्तगाल नाटो में शामिल हो गया जिसका अर्थ यह था कि नाटो के सभी सदस्य देश पुर्तगाल के राज्यक्षेत्र की रक्षा करने के लिए वचनबद्ध थे. नाटो का नेतृत्व अमरीका के हाथों में था और उस समय पुर्तगाल से सैन्य संघर्ष छेड़ने का अर्थ था अमरीका सहित बड़ी पश्चिमी ताकतों को भारत में हस्तक्षेप करने का न्यौता देना. अमरीका के राष्ट्रपति आईजनहावर एवं विदेश मंत्री डलेस ने यह घोषणा की थी कि गोवा पुर्तगाल का अभिन्न भाग है. इसका जवाहरलाल नेहरू ने विरोध किया था.

गोवा में जनमत संग्रह कराए जाने की मांग भी उठी थी जिस पर नेहरू ने जोर देकर यह कहा था कि गोवा के भारत में विलय के मामले में किसी बहस या विवाद की गुंजाइश नहीं है. इसके बाद केनेडी अमरीका के राष्ट्रपति बने जिनका भारत के प्रति रवैया कुछ नरम था.

सन् 1950 के दशक के पूर्वार्ध में एफ्रो–एशियन कान्फ्रेंस के सदस्यों ने भारत से गोवा का मुद्दा सुलझाने और वहां से पुर्तगालियों को निकाल बाहर करने का तकाजा किया. परंतु इसमें सबसे बड़ी बाधा नाटो और अमरीका की यह घोषणा थी कि गोवा पुर्तगाल का हिस्सा है. केनेडी के सत्ता में आने के बाद भारत का रूख भी बदल गया. यह साफ था कि पुर्तगाल को गोवा पर अपना नियंत्रण छोड़ने के लिए बातचीत से राजी करना मुश्किल होगा.

सन् 1955 में समाजवादी और साम्यवादियों ने इस मुद्दे पर आम सत्याग्रह शुरू किया. इन सत्याग्रहियों ने जब गोवा में प्रवेश किया तब वहां की सरकार ने उन पर गोलियां बरसाईं जिससे 20 सत्याग्रही मारे गए. इस घटना से व्यथित और क्रुद्ध नेहरू ने गोवा की आर्थिक नाकेबंदी की घोषणा की. पणजी में स्थित वाणिज्य दूतावास को बंद कर दिया और पुर्तगाल से कूटनीतिक संबंध तोड़ लिए गए.

आर्थिक नाकाबंदी से गोवा पूरी दुनिया से कट गया. यहां तक कि वहां के नागरिक समाचार पाने के लिए भी तरस गए. इस समय वामन सरदेसाई और उनकी पत्नि लीबिया लोबो सरदेसाई ने एक भूमिगत रेडियो स्टेशन शुरू किया जिसका नाम 'द वाइस ऑफ फ्रीडम' था. इस रेडियो स्टेशन के जरिए क्रांतिकारियों को सूचनाएं पहुंचाई जातीं थीं और झूठे पुर्तगाली प्रचार का पर्दाफाश किया जाता था. यह रेडियो स्टेशन नवबंर 1955 से दिसंबर 1961 तक गोवा से सटे वनक्षेत्र से संचालित होता रहा.

नेहरू ने केनेडी को कूटनीतिक चौनलों द्वारा यह संदेश भिजवाया कि अमरीका गोवा के मामले में हस्तक्षेप न करे. फिर 17 दिसंबर को नेहरू के आदेश पर आपरेशन विजय शुरू किया गया. यह अभियान अचानक शुरू किया गया था. भारतीय वायुसेना ने डबोलिन हवाईअड्डे के रनवे को नष्ट कर दिया. नौसेना ने गोवा के बंदरगाह को बंद कर दिया और 30 हजार भारतीय सैनिकों ने गोवा में प्रवेश किया. वहां मौजूद लगभग दो हजार पुर्तगाली सैनिकों को आसानी से परास्त कर दिया गया.

गोवा के गवर्नर को यह अहसास हो गया था कि बाहर से कोई सहायता आने वाली नहीं है और इसलिए अपनी सरकार के निर्देशों का उल्लंघन करते हुए उसने आत्मसमर्पण कर दिया. दो दिन बाद 19 दिसंबर को गोवा केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में भारत का हिस्सा बन गया. सन् 1987 में यह जानने के लिए जनमत संग्रह किया गया कि गोवा के निवासी पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र का हिस्सा बनना चाहते हैं या गोवा को स्वतंत्र राज्य बनाना. बहुसंख्यक मतदाताओं ने अलग राज्य बनाने के पक्ष में मत व्यक्त किया और इस तरह गोवा भारतीय संघ का 25वां राज्य बन गया. नेहरू ने गोवा की आजादी के लिए जो प्रयास किए वे उनके परिपक्व कूटनीतिज्ञ और सच्चा देशभक्त होने का सुबूत हैं. जहां तक मोदी का सवाल है, वे जो चाहे वो कहने के लिए स्वतंत्र हैं.

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया)

5वें फेज की वोटिंग के बीच यूपी पहुंचे मोदी

यूपी में रविवार को विधानसभा चुनाव के 5वें फेज में 12 जिलों की 61 सीटों पर वोटिंग खत्म हो गई। इस फेज में 55.15% वोटिंग हुई है। सबसे अधिक मतदान 59.64% चित्रकूट में हुआ है। अयोध्या 58.01% वोटिंग के साथ दूसरे नंबर पर है। 2017 में इन्हीं 61 सीटों पर 58.24% मतदान हुआ था यानी इस बार करीब 3% कम वोटिंग हुई है।

कौशांबी में सिराथू विधानसभा के धमावा गांव के लोगों ने EVM मशीन बदलने की अफवाह को लेकर हंगामा किया। आरोप है कि सेक्टर मजिस्ट्रेट की गाड़ी रोक उनके साथ अभद्रता की गई। उन्हे काफी देर सड़क पर ग्रामीणों ने घेर कर बंधक बनाए रखा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों को समझाकर सेक्टर मजिस्ट्रेट को मुक्त कराया है। सीओ सिराथू के मुताबिक ग्रामीणों पर नियमानुसार कार्यवाही के आदेश थाना पुलिस को दिए गए हैं। इस सीट से डिप्टी सीएम केशव मौर्या चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव के बीच पीएम नरेंद्र मोदी बस्ती में रैली करने पहुंचे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र भक्ति और परिवार भक्ति में फर्क होता है। हमारी सरकार बिना किसी भेदभाव के गरीब को छत देती है, लेकिन घोर परिवारवादियों के लिए उनका विकास, परिवार का विकास ही अहम है। इसलिए आपको एकजुट होकर NDA को जिताना है।

—नौशाद खान

अच्छाई के लिए उभारना और बुराई से रोकने को भी अपने काम में शमिल करें

पहले जमाने में जब हमारे श्रृषि मुनि या बुजुर्ग नाराज़ होते थे तो कहते थे मैं तुम्हें श्राप देता हूं। इसे दूसरे अर्थ में बददुआ भी कह सकते हैं। अगर दुआ से तक़दीर बदल जाती है तो बददुआ से क्या होगा?
नेकी या अच्छे काम करने से उम्र लम्बी होती है इसके उलट बदी या बुरे काम करने से क्या होगा?

Congratulations

TO THE YOUNG AND TALENTED STUDENTS OF TALENT ZONE ACADEMY FOR ACHIEVING SUCH MARKS IN NEET & IIT.

You all have proved that great things can be achieved through hard works and efforts I would also like to congratulate the faculty team of the Talent Zone Academy for their efforts and giving proper guidance to the students This result marks the first stroke of the beginning

Sana homoeopathy Aligarh

HOMEOPATHY MEDICINE FOR DIABETES

9760291236

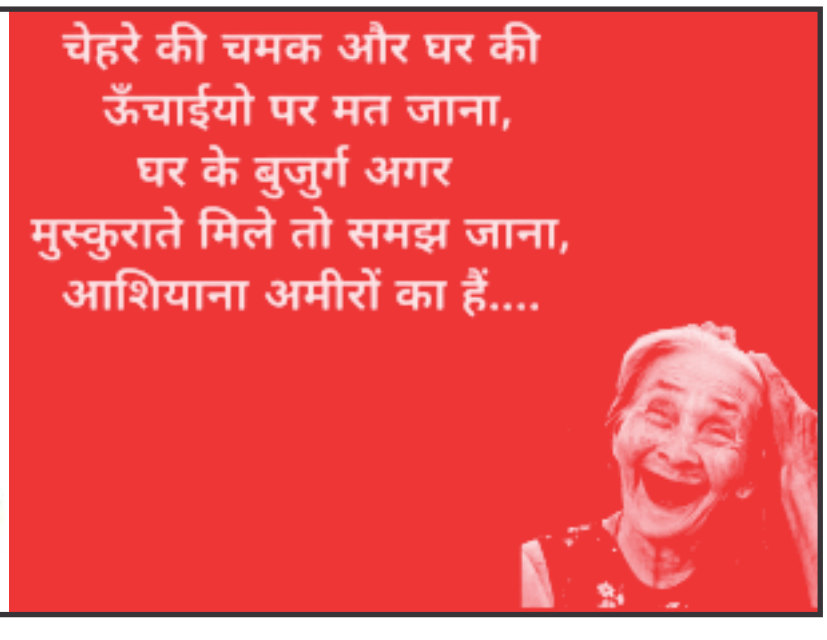

Graviola best cancer cell killer

The Sour Sop or the fruit from the graviola tree is a miraculous natural cancer cell killer 10,000 times stronger than Chemo-therapy. Why are we not aware of this? Its because some big corporation want to make back their money spent on years of research by trying to make a synthetic version of it for sale. So, since you know it now you can help a friend in need by letting him know or just drink some sour sop juice yourself as prevention from time to time. The taste is not bad after all. It's completely natural and definitely has no side effects. If you have the space, plant one in your garden. This tree is low and is called graviola in Brazil, guanabana in Spanish and has the uninspiring name "soursop" in English. The fruit is very large and the subacid sweet white pulp is eaten out of hand or, more commonly, used to make fruit drinks, sherbets and such. The principal interest in this plant is because of its strong anti-cancer effects. Although it is effective for a number of medical conditions, it is its anti tumor effect that is of most interest. This plant is a proven cancer remedy for cancers of all types. Research shows that with extracts from this miraculous tree it now may be possible to:

* Attack cancer safely and effectively with an all-natural therapy that does not cause extreme nausea, weight loss and hair loss
* Protect your immune system and avoid deadly infections
* Feel stronger and healthier throughout the course of the treatment
* Boost your energy and improve your outlook on life.
* Effectively target and kill malignant cells in 12 types of cancer, including colon, breast, prostate, lung and pancreatic cancer.
* The tree compounds proved to be up to 10,000 times stronger in slowing the growth of cancer cells than Adriamycin, a commonly used chemotherapeutic drug.
* What's more, unlike chemotherapy, the compound extracted from the Graviola tree selectively hunts down and kills only cancer cells.. It does not harm healthy cells. (ITN)

अच्छी सेहत के लिए एक नायाब नुस्खा

अच्छी सेहत का राज हज्जाज इब्ने युसूफ के दौर में दुनिया का एक नामवर चिकित्सक गुजरा है शोएब बिन जैद हज्जाज ने उससे अच्छी सेहत का नुस्खा लिखवा लिया. यह नुस्खा उसकी पूरी तिब्बी जिंदगी का निचोड़ था,

चिकित्सक ने हज्जाज को बताया (1) गोश्त सिर्फ जवान जानवर का खाओ, चाहे 10 दिन के भूखे ही क्यों ना हो. (2) जब दोपहर का खाना खाओ तो थोड़ी देर सो जाओ और शाम का खाना खाकर थोड़ी दूर पैदल चलो, चाहे तुम्हें कांटों पर चलना पड़े. (3) पेट की पहली गिजा जब तक हजम ना हो जाए, दूसरा खाना ना खाओ, चाहे तुम्हें 3 दिन लग जाए. (4) जब तक वॉशरूम ना जाओ, सोने के लिए बिस्तर पर ना जाओ, चाहे तुम्हें सारी रात क्यों ना जागना पड़े. (5) फलों के नए मौसम में फल खाओ, मौसम जाने लगे तो फल खाना छोड़ दो, चाहे तुम्हारे लिए खाने के लिए कोई और चीज दस्तयाब ना हो. (6) खाना खाकर पानी पीने से बेहतर है, तुम जहर पी लो, वरना खाना ही ना खाओ.